Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

7 2016

VOL. 130

FOUNDER'S ESSAY

अपने हृदय की रिक्तता को भरना

जब आप सुनते हैं कि आपके पड़ोसी ने एक विलासप्रिय कार खरीदा है या विदेश भ्रमण के लिए गया है तो आप ऐसा सोचने से अपने को रोक नहीं सकते हैं कि “मैं भी।” ऐसा सोचना मानवीय प्रवृति है। परन्तु सर्वप्रथम आप को धन की आवश्यकता है और उसके लिए आपको एवं आपकी पत्नी को अपने घरबार को छोड़कर काम करने के लिए जाना पड़ेगा। तब घर खाली होगा और वह खालीपन प्रायः हृदय तक पहुँचता है। मैं ऐसा अनुभव करने से रुक नहीं सकता हूँ कि आधुनिक समाज की इस समस्या का कारण घर का सुकून एवं प्रशान्त स्थान के रूप में ह्रास होना है।

जब किसी बच्चे पर “पढ़ो! पढ़ो!” का दबाव पड़ता है वह अचानक उसका विरोध करने लगता है। ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि अबोध बच्चे की आँखें अपने मातापिता की गलत जीवनचर्या को देखता है जिनकी इच्छाओं का वह शिकार है। सभी ने इन चीजों को देखा होगा, हम कितने ही धनी क्यों न हो जाँय हमें समतुल्य मात्रा में सुखानुभूति नहीं मिल सकती है। इसके विपरीत हम महसूस करना प्रारंभ करते हैं कि हमारी इच्छाओं में कुछ हैं जिनकी आपूर्ति नहीं हो सकती है।

अपने परिवार के सदस्यों को भिन्न दृष्टि से देखो, फिर अपने हृदय के ऊपर दृष्टि बदलकर देखो! क्या भौतिक साधनों से मिलनेवाली संतुष्टि से ऊपर उठकर सोचने का अनुकूल समय नहीं है कि हम सीधे-सादे जीवनशैली की ओर लौट आयें ? यदि अपने परिवार एवं आस-पास के लोगों के हिताय स्वयं को सर्म्पित करते हैं तो एक प्रकार का संतोष का भाव आयेगा।

काइसोजुकिन 8 (कोसेइ पब्लिसिंग क०), पृ-228-229 के सौजन्य से

Living the Lotus
Vol. 130 (July 2016)

Published by Rissho Kosei-kai International,
Fumonkan, 2-6-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo, 166-8537 Japan
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp
Senior Editor: Shoko Mizutani
Copy Editor: Parmita Shekhar
Editorial Staff of RK International

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

GUIDANCE
BY PRESIDENT NIWANO

लोगों के विकास में मदद करो

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

अपने को परिष्कृत करो

माता-पिता बच्चों का लालन-पालन करते हैं, शिक्षक शिष्यों को शिक्षा देते है, जो बरिष्ठ हैं वे छोटों का दिशानिर्देश करते हैं तथा मालिक अपने अधीन काम करनेवालों को बेहतर ढंग से काम करने में सहयता करते हैं । सोसाइटी, परिवार,

संगठन के लिए भी प्रत्येक का प्रयास महत्त्वपूर्ण है । इस कारण से, युगों की बात छोड़ भी दें तब भी दूसरों को शिक्षित करने और विकास में मदद देने की चुनौतियाँ समाज के सामने मुख्य विषय है ।

निश्चित रूप से बच्चों का लालन-पालन कठिन काम है । इसके कारण, कभी कभी दुर्घटनायें हो जाती हैं जब माता-पिता में एक भी शरीरिक एवं मानसिक रूप से बच्चा या बच्चों का ध्यान रखने में निःशक्त हो जाता है वह उनकी हत्या

कर देता है । सत्य यह है कि किसी संस्था में या ग्रुप में दूसरों को शिक्षित करने और विकास में मदद देने का उपक्रम नियोजित ढंग से नहीं चलता है । परिणाम स्वरूप जिसके कंधे पर जिम्मेदारी का भार है उस व्यक्ति विशेष की शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक क्षति का कारण बन सकता है और उसके व्यक्तिगत संबन्धो में विसंगति ला सकता है । ऐसी हालत में व्यक्ति का नियत शिक्षित करने एवं प्रगति में सहायक बनने का उद्देश्य पीछे छूट जाता है ।

अच्छा तो, ऐसे विकास के लिए जिम्मेदार व्यक्ति के दृष्टिकोण में किस उद्देश्य से एवं किनके निमित्त ऐसी योजनायें चलायी जाती हैं ? यद्यपि यह स्पष्ट रूप से एक या अनेक व्यक्तियों के या किसी संस्था या ग्रुप के प्रयोजनार्थ होता है, मैं समझता हूँ कि मुख्य रूप से दूसरों के विकास में सहयोग देने का कार्य तुम्हारे लिए अपने को बेहतर बनाने का सुअवसर लाता है । शिक्षा वास्तव में कर्मिक सम्बन्धों के अनुसार दूसरों से संबन्ध में आने का साधन है । जब तुम इस प्रकाश में सोचते हो तब ऐसी अपेक्षा नहीं होगी कि दूसरों की असोचनीय सफलता तुझे भी मिले या तुम तत्क्षण

मिलनेवाली सफलताओं की खोज में रहो । सचमुच में जब चीजें मनोमुकूल नहीं होती हैं, हम सोचने को बाध्य होते हैं कि हमारी अबतक का अनुभव हमें क्या सीख देता है ।

शिक्षाविद् इनोसुके आशिदा (1873-1951) का स्पष्ट कथन था जब उन्होंने कहा कि “स्वयं को बेहतर बनाना शिक्षा का सबसे बड़ा सत्य है ।” साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि “स्वयं को शिक्षित कर लेना ही दूसरों को शिक्षित करने का सबसे छोटा मार्ग है। दूसरे शब्दों में दूसरों को शिक्षित करने का प्रयास करने के पूर्व स्वयं को परिष्कृत करो, जो लघुतम मार्ग है ।

शिक्षा की सीमा

चाहे बच्चों के लालान-पालन का या किसी संस्थान के कर्मचारियों के विकास का विषय हो, हम सोचते हैं कि किस प्रकार का मानव प्राणि तैयार करना इन प्रयासों का लक्ष्य है। मैं सोचता हूँ कि मात्र इतना कहना प्रयाप्त होगा- "करुणा से प्लावित चित्तवाला प्राणि" अर्थात् वैसा व्यक्ति जो दूसरों के साथ सामंजस्य बनाकर रहता है तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखता है। इसलिए यदि विचार करते हैं कि कितनी अच्छी तरह वैसे व्यक्ति के विकास में सहयोग कर सकते है ? पूर्वोक्त मानव प्राणि के विकास के प्रसंग में दूसरों के साथ कर्मिक संबन्ध से जुड़े लोगों के बीच के विकास में सहयोग का सीधा मार्ग है।

यह एक प्राचीन शिक्षाप्रद कविता के समान है-

एक भद्र पुरुष को देखकर,
मैं स्वयं को परिष्कृत पाया,
मानो मैं किसी दर्पण के सामने हूँ।

जिन लोगों को दूसरों के हित की चिन्ता रहती है और वे उनके साथ मिलकर काम करते है, ऐसे लोग व्यापारिक निकायों के लिए अनमोल कर्मचारी बन सकते हैं जिन निकायों को सदा अच्छे निष्पादन की कोशिश रहती है। यह सत्य है कि जिस आदमी के पास दक्षता एवं ज्ञान के साथ साथ दूसरों की मदद करने की ललक है अनेक लोग उसको ढूँढ़ते रहते हैं क्योंकि वह कार्य को अन्जाम देगा जो संगठन को सफलता की ओर ले जायेगा।

फिर भी तुझे सावधान रहना चाहिए कि दूसरों की तरक्की की कामना में लगे लोगों को अपनी प्रत्यासा के प्रति उल्लसित रहने की आवश्यकता नहीं है। किसी ने कभी कहा है कि माता-पिता अपने सन्तानों के लिए जो लक्ष्य चुनते हैं उसे अपने तक सीमित रखें, शब्दों में व्यक्त नहीं करें। बल्कि आप स्वयं अपने कार्यों में अपनी कल्पना को चुपचाप व्यक्त होने दें, हो सकता है बच्चे उसे अपना लें। गैलिलीओ गैलिलेयी (1564-1642) ने कहा है- "तुम किसी को कुछ सिखला नहीं सकते हो, तुम सिर्फ़ उसे अपने अन्दर पाने में मदद कर सकते हो।" इसलिए लोगों की प्रगति में मदद करने में जो साधन है वह किसी की प्रशंसा एवं उत्साहित करना है। इसके द्वारा तुम उसको अपनी सर्वोत्तम दक्षता के विकास में सहायता कर कारण बन सकते हो।

इस अर्थ में यह महत्त्वपूर्ण है कि जिन पर दूसरों के विकास की जिम्मेदारी हैं उन्हें विनम्र होना चाहिए, अपनी सीमाओं एवं कमिओं की पहचान होनी चाहिए। उदाहरण स्वरूप जब मैं स्वयं घर से निकलता हूँ तो जो घर में रह जाते है उन से कहता हूँ, "इत्ते माइरीमस,"जिसका अर्थ है "मैं जाऊँगा और पूजा करुँगा।" यह "इत्ते किमस (मैं जा रहा हूँ, बाद में मिलते हैं)" का आदरसूचक है। "इत्ते किमस (मैं जा रहा हूँ, बाद में मिलते हैं)" जापान के दैनिक जीवन में बिदाई लेते समय का सामान्य शिष्टाचार एवं अभिवादन है। यह इसलिए कि जब कभी हम मिलते हैं, हमारा मिलना अनमोल है। घर लौटने के पूर्व इस बात को ताजा कर लेते हैं। मैं सोचता हूँ कि बिदाई के समय के शिष्टाचार एवं अभिवादन बारबार दुहराने से आदत बन जाती है जो हमें परिष्कृत करता है तथा हमारे एवं अन्य के बीच मैत्रीभाव बढ़ाता है।

From *Kosei*, July 2016.

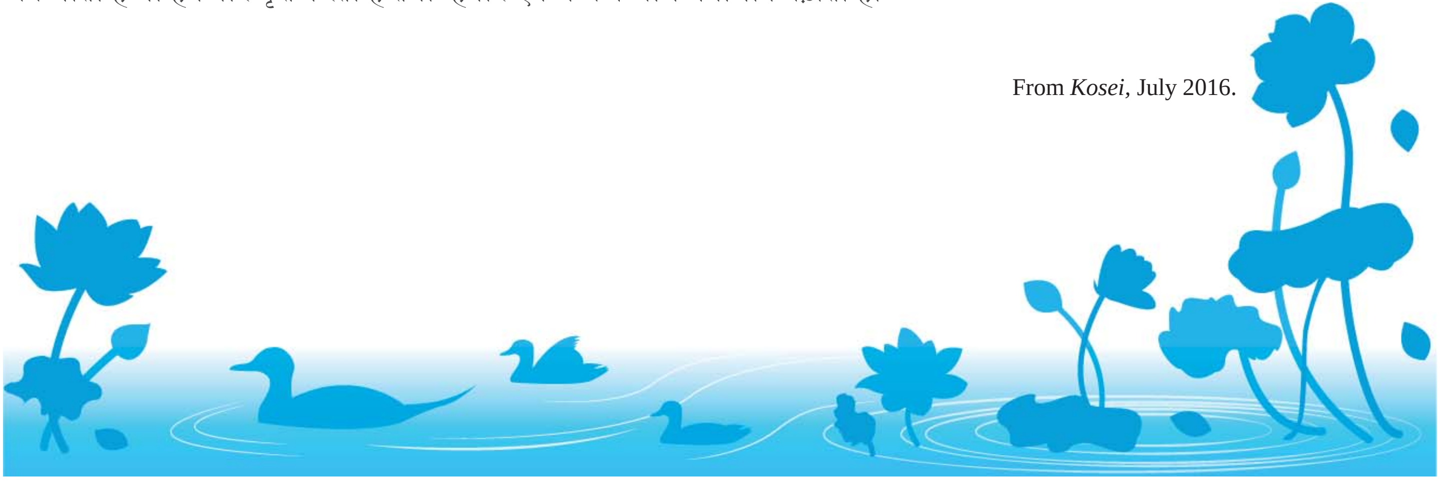

Child Care lifeline

घरेलु हिंसा के संबन्ध चर्चा

Q

प्रश्न- मेरी बेटी के साथ हिंसात्मक दुर्व्यवहार होता है। मैंने उसे तलाक ले लेने को कहा परन्तु उसने उसका बचाव किया और इन्कार कर दिया। कैसे मैं उसे मदद कर सकता हूँ ?

उत्तर- वह आदमी जिसके साथ उसका अन्तरंग संबन्ध है, चाहे पति या प्रेमी के रूप में, उसके द्वारा किसी स्त्री पर हिंसात्मक दुर्व्यवहार होता है उसे घरेलु हिंसा कहते हैं। यह एक गंभीर सामाजिक समस्या है। तुम्हारी बेटी परिस्थिति की विस्तृत जानकरी के बिना मैं किसी निष्कर्ष पर नहीं हूँ परन्तु मैं मानता हूँ कि वह घरेलु हिंसा की शिकार है।

सर्वप्रथम माता-पिता के लिए महत्त्व का है कि वे शान्तचित्त रहें तथा ध्यानपूर्वक सुनें कि वह अपने दैनिक जीवन के संबन्ध क्या कहती हैं। उससे उसकी यथास्थिति को समझा जा सकता है।

A

आमतौर पर कहें तो माना जाता है कि घरेलु हिंसा का समाधान कठिन है क्योंकि वह आदमी जो एक समय हिंसक है दूसरे समय दयालु बन जाता है। इस द्विविधता के कारण उसकी पत्नी पति के क्रोध के लिए स्वयं को दोषी मानती है और विच्छेद लेने के सुझाव को हवा में उड़ा देती है।

हिंसा कभी भी न्यायोचित नहीं है। जब आप की बेटी का पति हिंसक हो जाता है आप बेटी को उससे जहाँ तक संभव हो शीघ्र अलग कर दें,। क्योंकि इस समस्या का समाधान भावुक होकर निकाला नहीं जा सकता है।

बेटी को अलग रखने से नहीं केवल किसी प्रकार की शारीरिक हानि से बची रहेगी बल्कि वह और उसका पति अपने संबन्ध को सुस्पष्ट देख सकेंगे। आप बेटी को सलाह दे सकती हैं कि वह पति से कुछ समय के लिए अलग रहे। दुर्व्यवहार के बाबजूद भी यही वह पुरुष है जिसके साथ वह सम्पूर्ण जीवन बीताना चाहती है। अब उसे घरेलु हिंसा के खतरों के संबन्ध यथातथ्य जानकारी देना चाहिए। यदि वह अपने माता-पिता को सुनने को तैयार नहीं है तो हो सकता है कि वह दूसरे को सुनने को तैयार हो जाये। माता-पिता की सलाह के अतिरिक्त आप की बेटी को किसी तीसरे पार्टी अर्थात् सलाहकार की सलाह से फायदा हो सकता है।

एक और बात है जिसे माता-पिता ध्यान में रखें। यदि आपकी बेटी पति से तलाक लेती है यह आवश्यक नहीं है कि संबन्ध पूर्ण खत्म हो जायेगा। बहुत सारी औरतें तलाक के बाद पति का दुर्व्यवहार सहती रहती हैं क्योंकि पति अपने उन समस्याओं से निपटने में सफल नहीं हुआ है जो उन्हें हिंसक बनाता है।

यदि किसी तीसरे पार्टी की सहायता से या पति के परिवार वालों के सहयोग से मदद मिलती है, मैं आशा करता हूँ कि आप एवं आपकी बेटी प्रार्थना करेंगी कि उसका पति उन कारणों पर जो उसे क्रोधित करता हैं यथाशीघ्र काबू पा ले। इसमें संभवतः समय लगे परन्तु आपकी बेटी और पति के माता-पिता के बीच बढ़ते मानवीय संबन्धों से इस विपरीत समय में समस्या के विवेकशील हल तक पहुँचने में सहयोग मिल सकेगा।

(टोकियो रिसर्च इन्स्टिट्यूट फार फैमली एजुकेशन) के सौजन्य से)

टोकियो परिवारशिक्षा शोध संस्थान के सहयोग से

टोकियो परिवारशिक्षा शोध संस्थान "यदि माता पिता बदल सकते हैं तो उनके बच्चे भी बदल सकते हैं,"के सिद्धान्त के आधार के ऊपर व्याख्यान माला जापान के विभिन्न भागों एवं विदेशों में आयोजित करता है जिसमें बच्चों के पालन पोषण के संबन्ध विचार विमर्श किया जाता है। "बच्चों से सीखने संबन्धी पारिवारिक शिक्षा" के संरक्षण में अनेकानेक खुश परिवार का उदय हुआ है।

घरेलु हिंसा की परख

टोकियो रिसर्च इन्स्टिट्यूट फार फैमली एजुकेशन के इस विश्लेशन से कि कैसे माता अपनी पुत्री को घरेलु हिंसा का सामना करने में सहायता कर सकती है, हम लोगों को गहरी जानकारी मिली है।

बौद्धधर्म हमें ज्ञान देता है कि आनन्द इस पर निर्भर करता है कि आप चीजों को किस दृष्टि से देखते हैं तथा लोगों के साथ मिलना-जुलना कारण-कार्य के सिद्धान्त अर्थात् दोनों की सह-उत्पत्ति की समझ पर आधारित है।

क्यों पत्नी पति से अलग नहीं हो सकती यद्यपि वह उसके दुर्व्यवहार में घरेलु हिंसा की शिकार होती है?

शायद वह पति का बचाव करना चाहती है। यद्यपि उसकी माँ उसकी मदद करना चाहती है वह सर्वप्रथम स्वीकार करें और अच्छी तरह समझने की कोशिश करे कि उसकी पुत्री पति का बचाव करना चाहती है।

हम मानते हैं कि माँ पुत्री की भावना को अच्छी तरह समझती है से पुत्री को "तसल्ली मिलेगी" जो उसे संबल देगी। उसका आत्मविश्वास जगेगा और वह चीजों को शान्त मन से देखेगी। यदि पुत्री ऐसा करती है तो उसे अपने माँ के प्यार का अहसास होगा और उसे अपने जीवन की अमूल्यता का बोध होगा।

युक्ति से बुद्ध माताओं को एक मौका देते हैं कि वे सहृदयता से स्नेहपूर्वक सच्चाई से पहचाने कि कैसे मेरी पुत्री रह रही है।

(धर्म शिक्षा एवं मानव संसाधन विभाग, रिश्शो कोसेइ काइ के सम्पादकीय प्रबन्धन से)

Please give us your comments!

We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus.

Please send us your comments to the following e-mail address.

E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Director's Column

लोगों के विकास में मदद करो

विश्व संघ के 29 मई 2016 के सम्मेलन में स्वदेशी एवं विदेशी सदस्यों के बीच विचारों के आदान-प्रदान सत्र का आयोजन हुआ। टोकियो क्षेत्र के एक युवा सदस्या ने, जो कुछ सीखा था, उन्हें बड़े जोश-खरोश से सबके साथ शेयर करते हुए कहा- मैंने पाया है कि लोगों के दुःख संताप की प्रकृति, देश एवं भाषा के परे, समान है। मैंने यह भी सीखा है कि लोग बुद्ध की देशना से मुक्ति पा लेते हैं चाहे वे किसी भी देश में रहते हैं या जिस किसी भाषा को बोलते हैं। उसकी यह विवेचना मेरे अन्तर्तल में गूँज रही है।

बीते वर्षों में मैं कई देशों में गया और वहाँ अनेक लोगों के साथ बुद्ध की धर्मदेशना को शेयर किया। उनमें जिस एक का मैं कायल हूँ वह बौद्ध धर्म की सार्वभौमिकता है। युवा सदस्या ने भी इसे ग्रहण किया है। प्रत्येक व्यक्ति विश्व की वास्तविकता को स्वीकार करता है फिर भी लोग स्वभावतः ही विभ्रम में जी रहे हैं। इस कारण से वे दुःख भोग रहें हैं जबकि वे आनन्द की कामना करते हैं। विश्व की वास्तविकता का बोध हो जाने से प्रत्येक व्यक्ति मुक्त हो जायेगा और उसे सुख शान्ति प्राप्त होगी। मेरा विश्वास है कि हम रिश्शो कोसेइ काई के सदस्यों के समक्ष, जिन्होंने बुद्ध की धर्मदेशना को अंगीकार किया है, दुनियाँ भर के कष्ट में पड़े लोगों के साथ धर्मदेशना को शेयर करने की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय बिभाग निर्देशक
शोको मिजुतानी

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

Rissho Kosei-kai

Overseas Dharma Centers 2016

Rissho Kosei-kai International
5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA
Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Rd.Clearwater, FL 33764, USA
Tel: (727) 560-2927
e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattle@juno.com
http:// www.buddhistLearningCenter.com

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654
e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls
1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1571 Race Street, Denver, Colorado 80206, U.S.A.
Tel: 1-303-810-3638

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
635 Kling Dr, Dayton, OH 45419, U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung
No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,
Taichung City 401, Taiwan
Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 *Fax:* 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters
Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong,
Special Administrative Region of the People's Republic of China
Tel & Fax: 852-2-369-1836

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15f Express tower, Enkh taiwnii urgun chuluu, 1st khoroo, Chingeltei district, Ulaanbaatar, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia
Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris
86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

Rissho Kosei-kai of Sydney

International Buddhist Congregation (IBC)
5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami, Tokyo, 166-8537, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House No.467, Road No-8 (East), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Maitree Sangha, Mayani Bazar, Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei-kai Dhamma Foundation, Sri Lanka
382/17, N.A.S. Silva Mawatha, Pepiliyana, Boralesgamuwa, Sri Lanka
Tel & Fax: 94-11-2826367

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi, 110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal
Tel: 977-1-552-9464 *Fax:* 977-1-553-9832
e-mail: nrkk@wlink.com.np

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai